International Journal of Home Science 2022; 8(1): 137-138

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2022; 8(1): 137-138
© 2022 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 21-10-2021
Accepted: 02-12-2021

अल्पा यादव
शोध छात्रा विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत।

Corresponding Author:
अल्पा यादव
शोध छात्रा विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत।

जनजाति एवं गैर जनजाति किशोरों का सामाजिक, संवेगात्मक नैतिक एवं जीवन मूल्यों का अध्ययन

अल्पा यादव

सारांशः
जनजाति समाज के एक ऐसे अंग हैं जो कि मानव संस्कृति की विभिन्न अवस्था में रहते हैं, और समाज की मुख्य धारा से अलग रहते हैं। इस कारण से अत्यधिक पिछड़े हुए होते हैं। समाज का कर्तव्य है कि समाज का प्रत्येक प्राणी सुखी, सम्पन्न और स्वस्थ जीवन यापन करे। इस हेतु सरकार ने विभिन्न प्रकार की योजनाएं बनायी। परन्तु आज भी ये योजनाएं उन तक नहीं पहुंच पाती जिससे वर्तमान समय में भी गैर जनजाति किशोरों और जनजाति किशोरों में अत्यधिक अंतर देखने को मिलता है। जिससे किशोर वर्ग पिछड़ा है।
सन् 1991 के जनगणना के अनुसार भारत में आदिवासियों की संख्या 6.758 करोड़ थी। सन 2011 की जनगणना में आदिवासियों की कुल संख्या 10 करोड़ से अधिक दर्ज की गयी थी। प्रस्तुत शोध में किशोरों के सामाजिक, नैतिक एवं शैक्षिक उपलब्धि वाले जनजातीय तथा गैर जनजातीय किशोरों के मध्य काफी अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्द – संस्कृति, शैक्षिक उपलब्धि, जनजाति, गैर जनजातियां।

प्रस्तावनाः
प्राचीन काल से ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य किशोरों की अन्तर्निहित योग्यताओं, क्षमताओं का विकास करना रहा है। इन योग्यताओं का विकास तभी संभव है जब उनके विकास के लिए उचित अवसर प्रदान किये जाए। अतः किशोरों के ज्ञान हेतु इन्हें विद्यालय के वातावरण से सम्बन्धित पुस्तकीय ज्ञान से आगे परम कर्तव्य है कि उदार, विशाल दृष्टि रखते हुए पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही व्यक्तित्व विकास को अपना परम लक्ष्य मानकर इनके लिए अवसरों की उत्तम व्यवस्था करें जिससे किशोरों का व्यक्तित्व विकास संभव हो सके।
भारत वर्ष संस्कृति एवं मूल्य प्रधान देश है। इसलिए भारत ने अपनी एक लिखित पहचान पूरे विश्व में बना रखी है। सामाजिक, शैक्षिक एवं नैतिक ऐसे मूल्य हैं जिसके बिना हमारा जीवन पशु के समान है। आज के परिवेश में किशोरों में इन मूल्यों के विकास हेतु निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। शैक्षिक जगत में शिक्षा के स्तर की बात होती है तो छात्रों के गिरते सामाजिक व नैतिक स्तर पर भी शिक्षाविदों ने चिन्ता जताई। किशोर जो सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक स्तर, परिपक्वता अध्ययन सम्बन्धी आदत भी इस बात पर निर्भर करती है कि उसका उपर्युक्त विकास किस वातावरण में हो रहा है।

शोध के उद्देश्य–
1. किशोरों के संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन।
2. जनजातीय एवं गैर जनजातीय किशोरों के जीवन मूल्यों का अध्ययन।
3. जनजातीय एवं गैर जनजातीय किशोरों के सामाजिक, नैतिक मूल्यों का अध्ययन।

शोध की परिकल्पना–
1. जनजातीय एवं गैर जनजातीय किशोरों के जीवन मूल्य में भिन्नता हो।
2. किशोरों के संवेगात्मक परिपक्वता के आयामों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. जनजातीय एवं गैर जनजातीय किशोरों के सामाजिक, नैतिक मूल्यों में भिन्नता हो।
4. शासकीय सुविधाओं एवं कार्यक्रमों, योजनाओं से जनजातीय एवं गैर जनजातीय किशोरों को

अवगत कराना और लाभान्वित करने का प्रयास करना।
5. शिक्षा के प्रति जागरूकता लाना।

अनुसंधान कार्य विधि–

यह अनुसंधान कार्य प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है जिसमें जानकारी प्राप्त करने हेतु गुणांक एवं मात्रात्मक दोनों ही प्रकार की आंकड़ों का संग्रहन किया गया है। आंकड़ों के संग्रहन हेतु विभिन्न अध्ययन उपागमों का उपयोग आवश्यकतानुसार किया गया है। विस्तृत जानकारी हेतु प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या–

जनजातीय एवं गैर जनजातीय किशोरों को दो श्रेणियों में क्रमशः बाँटा गया है।
जिसकी संख्या 30 – 30 रखी गयी है।

तालिका 1 जनजातियों किशोरों के जीवन मूल्यों का अध्ययन

सामाजिक मूल्य	10	20
संवेगात्मक मूल्य	10	20
नैतिक मूल्य	10	20
		60

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्राप्त उपलब्धि जनजातियों किशोरों के संवेगात्मक, सामाजिक, नैतिक मूल्य उनके जीवन मूल्यों से सम्बन्धित है प्राप्त जानकारी से ज्ञात होता है कि उनका जीवन मूल्य बढ़ता है तथा उनका प्राप्त औसतन 60ः है।

तालिका 2 गैर जनजातीय किशोरों के जीवन मूल्यों का अध्ययन

सामाजिक	10	20
संवेगात्मक	10	20
नैतिक	10	20
		60

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि प्राप्त उपलब्धियाँ गैर जनजाति किशोरों के सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक मूल्य उनके जीवन मूल्य से सम्बन्धित है। प्राप्त जानकारी से ज्ञात होताहै कि उनका जीवन मूल्य बढ़ता है तथा उनका प्राप्त औसतन 60ः है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकत्री ने यह पाया कि जनजाति व गैर जनजाति किशोरों के जीवन मूल्यों में उनके सामाजिक, संवेगात्मक एवं नैतिक रूपों में काफी अन्तर है। अतः इनमें सुधार के लिए शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है शिक्षा में प्रगति होने से ही किशोरों में सामाजिक विकास होगा संवेगात्मक स्थिरता बढ़ेगी तथा नैतिक विकास प्रबल होगा तथा उनके जीवन का समुचित विकास होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ब्लेयर जोन्स एवं सिम्पसन – एजूकेशन साइकोलोजी, मैकमिलन, 1962।
2. एडम्स हेनरी ई0 – साइकोलोजी ऑफ एडजस्टम ट0द0 रोनाल्ड प्रेस कम्पनी न्यूयार्क 1972।
3. डॉ. एच0 के0 – ''सांख्यिकी के मूल तत्व श्री विवेक पुस्तक मन्दिर आगरा–2 (2011)
4. सिंह डॉ0 रामपाल शर्मा डॉ0 ओ0पी0– शैक्षिक अनुसन्धान व सांख्यिकी श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा (2008)
5. डा0 मेश्राम श्रीमती बी0एन0 2018 – इंटरनेशनल जनरल ऑफ रिव्यू एण्ड रिसर्च इन सोसल साइंस।
6. एस0एल0 गजपाल यादव अंजलि 2019 – जनरल ऑफ रविशंकर युनवर्सिटी रायपुर, छत्तीसगढ़।